श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ का मासिक मुखपत्र

मङ्गलायतन टाइम्स

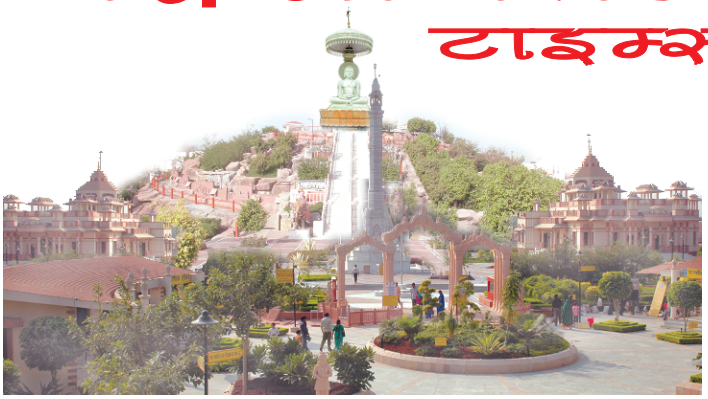

Mangalayatan Times

(आध्यात्मिक एवं नैतिक चेतना का अग्रदूत)

वर्ष - 8 | अङ्क - 11 | नवम्बर 2016 | (वि.नि.सं. 2543) | मूल्य - 50 पैसा प्रति

महावीर निर्वाणोत्सव के पावन अवसर पर तीर्थधाम मङ्गलायतन में सम्पन्न हुआ

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

तीर्थधाम मङ्गलायतन : प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी तीर्थधाम मङ्गलायतन में भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण कल्याणक प्रसंग पर आयोजित छह दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ़ तथा श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के साथ-साथ मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका (मोना) ने भी इस बार शिविर में सहभागिता दर्ज की। विदित हो कि समयसार परमागम के कर्ता-कर्म अधिकार की स्वाध्याय को केन्द्र बनाकर आयोजित यह शिविर अध्यात्म मनीषी बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' की पुण्यस्मृति में आयोजित था।

दिनांक 26 से 31 अक्टूबर तक आयोजित इस शिविर का शुभारम्भ मंगल शोभायात्रापूर्वक हुआ। झण्डारोहण स्थल पर श्री दिलीप सेठी, कोलकाता एवं श्री प्रेमजीभाई अमेरिका ने संयुक्तरूप से ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात् प्रतिदिन श्री सिद्धपरमेष्ठी विधान का आयोजन स्वर्गीय श्री पद्मचन्दजी जैन 'भगतजी' की स्मृति में उनके परिवार श्रीमती मंजू जैन धर्मपत्नी विनोदकुमार जैन, श्रीमती टीना जैन धर्मपत्नी विनीत जैन, खिरनी गेट, अलीगढ़ के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। जिसे पण्डित संजय जैन शास्त्री एवं मङ्गलार्थी छात्रों ने सामूहिक रूप से सम्पन्न कराया। इसी प्रकार सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का विशेष आयोजन भी आकर्षण का केन्द्र रहा।

शिक्षण शिविर के दौरान वीतरागी तत्त्वज्ञान की अमृत वर्षा के क्रम में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार कर्ताकर्म अधिकार पर हुए अध्यात्मरस भरपूर प्रवचन एवं मङ्गलार्थी छात्रों द्वारा उन पर किये गये प्रश्नोत्तर विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे। विद्वानों के स्वाध्याय क्रम में प्रात:काल प्रौढ़ कक्षा पण्डित अरुण जैन शास्त्री, जयपुर द्वारा चलायी गयी। इसके अतिरिक्त पण्डित विमलदादा झाँझरी द्वारा समयसार गाथा 73; पण्डित वीरेन्द्रकुमार जैन आगरा द्वारा कर्ताकर्म अधिकार की प्रारम्भिक गाथाओं; पण्डित प्रदीप झाँझरी उज्जैन द्वारा भी कर्ताकर्म की विशिष्ट गाथाओं पर स्वाध्याय का लाभ मिला। बाबूजी की कृति चैतन्य की चहल-पहल में समागत ज्ञानस्वभाव विषय पर पण्डित देवेन्द्रकुमार जैनद्व ारास् वाध्यायक रायाग या ास ायंकालीनस् वाध्यायम ेंप ण्डित संजय जैन शास्त्री द्वारा समयसार कर्ताकर्म अधिकार का सामान्य अवलोकन तथा पण्डित सचिन जैन द्वारा समयसार गाथा 142-144 पर स्वाध्याय कराया गया। डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका की कक्षा भी प्रभावी रही। अन्तिम दिन पण्डित प्रकाश जैन छाबड़ा इन्दौर के स्वाध्याय का लाभ भी प्राप्त हुआ। प्रारम्भ के तीन दिनों तक सम्पूर्ण दिवस के स्वाध्याय पर आधारित ज्ञानगोष्ठी का विशेष आयोजन इण्टरनेट के माध्यम से किया गया, जिसे समागत अतिथियों के अतिरिक्त विदेशों में निवास कर रहे साधर्मीजनों ने भी लाईव देखा। अन्तिम तीन दिनों में समयसार परमागम के उदाहरणों पर मङ्गलार्थी छात्रों की प्रस्तुति; कर्म हरा जीव जीता विषय पर उज्जैन मण्डल की प्रस्तुति और बाबू युगलजी द्वारा रचित काव्यों का समागत विद्वानों द्वारा कवि सम्मेलन विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा।

इसी अवसर पर भगवान आदिनाथ विद्यानिकेतन के मङ्गलार्थी

छात्रों द्वारा किये गये श्रेष्ठतम कार्यों के लिये उन्हें पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस प्रकार अनेक विशेष उपलब्धियों के साथ यह शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इस शिविर मेंह ुएस भीस् वाध्याय http://ustre.am/1xA9P परउ पलब्धहैं, जिन्हें आसानी से देखा और सुना जा सकता है।

महावीर निर्वाणोत्सव का भव्य आयोजन

तीर्थधाम मङ्गलायतन : आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के बीच ही दिनांक 30 अक्टूबर 2016 को शासननायक भगवान महावीरस्वामी का निर्वाणोत्सव महापर्व अत्यन्त भक्तिभावपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री महावीर जिनालय से शोभायात्रापूर्वक भगवान महावीर के जिनबिम्ब को कैलाशपर्वत पर स्थापित कर विशेष पूजन विधान का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् देश-विदेश से पधारे सैकड़ों साधर्मीजनों की उपस्थिति में भक्तिभावपूर्वक श्रीफल अर्पण कर निर्वाण महोत्सव मनाया गया।

तीर्थधाम चिदायतन के ट्रस्टी मण्डल की बैठक सम्पन्न

तीर्थधाम मङ्गलायतन : तीर्थधाम मङ्गलायतन में आयोजित शिक्षण शिविर के पावन अवसर पर दिनांक 27 अक्टूबर 2016 को हस्तिनापुर में निर्माणाधीन तीर्थधाम चिदायतन के ट्रस्टी मण्डल की बैठक श्री पवन जैन के निवास 'आर्जव' में आयोजित की गयी, जिसकी अध्यक्षता ट्रस्ट अध्यक्ष श्री अजितप्रसाद जैन ने की। प्राय: सभी ट्रस्टी, विद्वान एवं विशिष्ट व्यक्ति इस बैठक में सम्मिलित हुए। मंगलाचरणोपरान्त श्री पवन जैन ने उपस्थित सभी को तीर्थधाम चिदायतनक ोप ृष्ठभूमिए वंव हाँब ननेज ार हें वभिन्नप्रकल्पोंक ा परिचय प्रदान किया। तत्पश्चात् आगामी 11 से 13 फरवरी 2017 को आयोजित होनेवाले शिलान्यास महोत्सव के विषय में परस्पर चर्चा करते हुए सम्पूर्ण रूपरेखा तैयार की गयी। इस कार्यक्रम को भव्यरूप से सम्पन्न कराने हेतु सभी तैयारियाँ जोरों से चल रही हैं। अनेक कमेटियों का निर्माण किया जा चुका है जो अपने-अपने कार्य को सुचारू ढंग से सम्हाल रही हैं।

इस अवसर पर विश्व समुदाय के सभी आत्मार्थीजनों को दिनांक 11, 12, 13 फरवरी 2017 को हस्तिनापुर में आयोजित इस विशाल प्रकल्प के शिलान्यास महोत्सव में पधारने का भावभीना आमन्त्रण है। आप सभी अवश्य पधारें - ऐसा ट्रस्टीमण्डल का विनम्र निवेदन है।

निवेदक :

श्री शान्तिनाथ अकम्पन कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट

हस्तिनापुर (मेरठ)

बाबू 'युगल' जी की प्रथम पुण्य स्मृति पर

आध्यात्मिक शिविर एवं 170 तीर्थंकर मण्डल विधान सम्पन्न

कोटा : आध्यात्मिक मनीषी श्रद्धेय पूज्य बाबू 'युगल' जी कोटा की प्रथम पुण्य स्मृति पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कोटा की ओर से दिनांक 30 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2016 तक यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर जैनदर्शन के ख्यातिप्राप्त विद्वान पण्डित राजेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर; पण्डित संजय शास्त्री, तीर्थधाम मङ्गलायतन एवं पण्डित मनोज जैन, जबलपुर का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ। पण्डित राजेन्द्रकुमारजी द्वारा श्री समयसार जी ग्रन्थ एवं बाबूजी की गद्य एवं पद्य रचनाओं पर सूक्ष्म एवं सागरगर्भित स्वाध्याय का लाभ मिला।

प्रतिदिन प्रात: 170 तीर्थंकर मण्डल विधान आनन्द एवं भावपूर्ण जयमाला के अर्थ के साथ विधानाचार्य पण्डित संजय शास्त्री द्वारा सम्पन्न किया गया।

रात्रि में प्रतिदिन बाबूजी की आध्यात्मिक विषयों पर हुई सूक्ष्म तत्त्वचर्चा की वीडियो दिखायी गयी। जिसे देखकर सभी भावविभोर हो गये।

दिनांक 30 को संगोष्ठी रखी गई, जिसका विषय 'पूज्य बाबू युगलजी एवं उनका जीवन दर्शन' था, जिसमें पण्डित मनोज जैन जबलपुर, पण्डित संजय शास्त्री आदि मुख्य वक्ताओं ने बाबूजी के जीवन एवं साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किये और कहा कि पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी की आध्यात्मिक क्रान्ति को आगे बढ़ाने में बाबूजी का अपूर्व योगदान है। अध्यक्षता पण्डित राजेन्द्रकुमार जैन द्वारा की गयी एवं आपके द्वारा बाबूजी के जीवन पर स्वरचित कविता अपने मधुर स्वर में सुनायी। गोष्ठी का संचालन पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री, कोटा द्वारा किया गया।

दिनांक 1 को काव्य संध्या रखी गयी जिसमें बाबूजी की परम आध्यात्मिक एवं हिन्दी साहित्य की अमूल्य काव्य रचनाएँ मधुर स्वर में वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत की गयी। जिसका संचालन श्री अजित जैन 'अचल' ग्वालियर द्वारा किया गया और कहा कि ऐसे अमर साहित्यकार को स्मरण करते हम गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

इस अवसर पर कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में आचार्य कुन्दकुन्ददेव, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं श्रद्धेय बाबू युगलजी कोटा के चित्रपट का अनावरण किया गया, साथ ही बाबूजी के जीवनवृत्त पर सुन्दर फोटोगैलरी तैयार की गयी, जिसमें विभिन्न अवसरों के ऐतिहासिक 150 फोटो प्रदर्शित किये गये।

पण्डित टोडरमल स्मारक जयपुर के स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में

तीर्थराजा सम्मेदशिखर में समयसार विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

सम्मेदशिखर (झारखण्ड) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर की स्वर्ण जयन्ती के पावन अवसर पर तीर्थराज सम्मेदशिखर में डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल द्वारा रचित समयसार विधान दिनांक 9 से 14 अक्टूबर तक आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन भी किया गया। इस सभा को सम्बोधित करते हुए डॉ० भारिल्ल ने पण्डित प्रवर टोडरमलजी के नेतृत्व में किये गये इन्द्रध्वज विधान का उल्लेख करते हुए बताया कि वह विधान ही इस विधान का आधारसूत्र है। इस अवसर पर प्रात:काल पूज्य गुरुदेवश्री का समयसार गाथा 73 पर सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए। तत्पश्चात् डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल द्वारा सल्लेखना, जिनपूजन का यथार्थ स्वरूप एवं अकर्तावाद इत्यादि विषयों पर मार्मिक स्वाध्याय हुए। रात्रि में ब्रह्मचारी सुमतप्रकाश खनियाधाना द्वारा समयसार परिशिष्ट के आधार पर ज्ञानस्वभाव पर स्वाध्याय हुआ। इनके अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमार जैनज बलपुर,प ण्डितअ भयकुमारश ास्त्रीद वलाली,प ण्डितप दीप झाँझरी उज्जैन, पण्डित शान्तिकुमार पाटीज जयपुर, डॉ० संजीवकुमार गोधा जयपुर, पण्डित संजय शास्त्री मंगलायतन, पण्डित अनिल शास्त्री भिण्ड, पण्डित सुनील शास्त्री जैनापुरे राजकोट, पण्डित राकेश शास्त्री दिल्ली, पण्डित विपिन शास्त्री मुम्बई इत्यादि के समयसार ग्रन्थ पर स्वाध्याय हुए। प्रात:कालीन प्रौढ़ कक्षा पण्डित कमलकुमार पिड़ावा द्वारा ली गयी। इसी अवसर पर जिनवाणी चैनल पर डॉ० भारिल्लजी और अरिहन्त चैनल पर पूज्य गुरुदेवश्री के मार्मिक प्रवचनों का प्रसारण भी किया गया। तीनों समय बाल कक्षाएँ डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में चलायी गयी। जिनेन्द्र भक्ति का भी आकर्षक रहा।

समयसार मण्डल विधान के विधानाचार्य पण्डित अभयकुमार शास्त्री, पण्डित शान्तिकुमार पाटील, पण्डित संजय शास्त्री मंगलायतन, डॉ० संजीव गोधा के साथ-साथ पण्डित राजकुमार उदयपुर, पण्डित अजित जैन अलवर, पण्डित ऋषभ जैन छिन्दवाड़ा, पण्डित धर्मेन्द्र जैन कोटा, पण्डित मनीष जैन पिड़ावा, पण्डित विवेक जैन इन्दौर, ब्रह्मचारी श्रेणिक जैन जबलपुर, ब्रह्मचारी नन्हेभैया सागर, ब्रह्मचारी मनोज जैन जबलपुर, एवं सुबोध जैन ग्वालियर का विशेष सहयोग रहा। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में देशभर से लगभग दस हजार साधर्मियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता का श्रेय श्री महिपाल जैन ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री सुरेश पाटनी कोलकाता, श्री भरतभाई टिम्बडिया कोलकाता, श्री सुशीलकुमार बजाज (मुन्नाभाई) कोलकाता, शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल जयपुर, विपिन शास्त्री, पीयूष शास्त्री, रूपेन्द्र शास्त्री इत्यादि को जाता है। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन परमात्मप्रकाश भारिल्ल ने किया।

तीर्थधाम चिदायतन के शिलान्यास का मंगल आमन्त्रण

सम्मेदशिखर (झारखण्ड) : पण्डित टोडरमल स्मारक जयपुर के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित समयसार विधान एवं शिक्षण शिविर के अन्तर्गत पौराणिक नगरी हस्तिनापुर में निर्माणाधीन तीर्थधाम चिदायतन के शिलान्यास का हार्दिक आमन्त्रण उपस्थित साधर्मी समुदाय को प्रदान किया गया। विदित हो कि इस अवसर पर तीर्थधाम मङ्गलायतन की ओर से पण्डित अशोक लुहाड़िया और पण्डित संजय जैन शास्त्री वहाँ पहुँचे थे, जिन्होंने बहुत ही उत्साहपूर्वक तीर्थधाम चिदायतन की पृष्ठभूमि एवं वहाँ बनने जा रहे विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी देते हुए सभी आत्मार्थियों से 11 से 13 फरवरी 2017 तक हस्तिनापुर पधारने का आमन्त्रण प्रदान किया। सभी ने अत्यन्त हर्षोल्लासपूर्वक उद्भव होने जा रहे इस नवीन तीर्थधाम के प्रति अपना अनुमोदन व्यक्त किया।

दशलक्षण में विशेष व्याख्यान

अशोकनगर : दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में श्री महावीरस्वामी जिनमन्दिर में दशलक्षण पर्व विशेष पूजन विधान एवं ज्ञान-आराधना सहित मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनसार परमागम पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ तथा इन्हीं प्रवचनों को आधार बनाकर पण्डित वीरेन्द्रकुमार जैन आगरा द्वारा तीनों समय प्रासंगिक स्वाध्याय का विशेष लाभ प्राप्त हुआ।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमन्दिर का भूमिशुद्धि कार्यक्रम सम्पन्न

सिंगोली : श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट सिंगोली द्वारा परम उपकारी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सातिशय प्रभावनायोग में निर्माणाधीन श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमन्दिर एवं कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्यायभवन का भूमिशुद्धि कार्यक्रम 16 अक्टूबर 2016 को आशातीत उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री आदिनाथ पंच कल्याणक विधान का आयोजन प्रतिष्ठाचार्य बालब्रह्मचारी जतीशचन्द्र शास्त्री के निर्देशन में पण्डित अशोक जैन उज्जैन और सम्मेद जैन शास्त्री ने सम्पन्न कराया। पूज्य गुरुदेवश्री के मांगलिक सी.डी. प्रवचनों के साथ-साथ ब्रह्मचारी जतीशचन्द्र शास्त्री एवं पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन बिजौलियां / मंगलायतन के स्वाध्याय का लाभ उपस्थित 700 से अधिक साधर्मियों ने प्राप्त किया।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष निर्मलकुमार जैन भीलवाड़ा, मुख्य अतिथि प्रेमचन्द बजाज कोटा, विशेष अतिथि वीरेन्द्रकुमार हरसोरा,

शेष पृष्ठ 8 पर.....

पूज्य गुरुदेवश्री का वैराग्य प्रेरक प्रवचन

हे जीव! लाखों का एक-एक क्षण जा रहा है...

जो वन में एकाकी वास करते थे, आत्मा के आनन्द में झूलते-झूलते जिनका जीवन व्यतीत होता था, जिनके शरीर पर वस्त्र का ताना भी नहीं था, और जो एक पाई का भी परिग्रह नहीं रखते थे – ऐसे निस्पृह-वीतरागी सन्त की यह वाणी है; जीवों को परमहितरूप ऐसा यह उपदेश है। वे कहते हैं कि अरे जीव! प्रतिक्षण आयु घट रही है और तू बाह्य में लक्ष्मी आदि की वृद्धि के हेतु अपना समय गँवा रहा है, किन्तु आत्मा के ज्ञान-आनन्द की वृद्धि कैसे हो? – उसका तुझे विचार तक नहीं आता। अरे अविवेकी! तुझे अपने जीवन से भी अधिक प्यारी लक्ष्मी है! इसलिए तू लक्ष्मी के लिए जीवन गँवा रहा है? – धिक्कार है तेरी मूढ़बुद्धि को! **लाखों-करोड़ों रुपये देने पर भी इस मनुष्य जीवन का एक क्षण मिलना दुर्लभ है** – ऐसे जीवन को तू फूटी बादाम की भाँति व्यर्थ गँवा रहा है। हे वत्स! अपने हित के उपाय का विचार कर!

कोई ऐसा विचार करता है कि – 'इस समय तो लक्ष्मी एकत्रित लूँ, फिर उसका दानादि में उपयोग करके पुण्य उपार्जन करूँगा' – यह भी मूढ़ जीव का विचार है। अरे जीव! पाप करके लक्ष्मी एकत्रित करने के बदले इसी समय ममत्व कम करके आत्महित का उपाय कर! दानादि के बहाने इस समय तो तू अपने ममत्व का पोषण कर रहा है। जैसे, कोई व्यक्ति ऐसा विचार करे कि पहले शरीर पर कीचड़ लपेट लूँ और फिर स्नान कर लूँगा – तो वह अविवेकी ही है; उसी प्रकार जो ऐसा विचार करता है कि 'भविष्य में दानादि करने के लिए वर्तमान में व्यापारादि करके पैसा इकट्ठा कर लूँ और फिर पात्र दानादि कार्यों से पाप धो डालूँगा' – तो वह भी अविवेकी है। वर्तमान में उसके जो पाप और लोभ के भाव की पुष्टि हो रही है, उसे वह नहीं देखता है।

अरे मूढ़! इस समय पाप करके फिर पुण्य करने को कहता है तो उसकी अपेक्षा इसी समय पापभाव छोड़कर, अपने उपयोग को आत्महित में एकाग्र कर न! कीचड़ लपेट कर फिर नहाने की अपेक्षा पहले से कीचड़ न लपेटना ही अच्छा है। उसी प्रकार इस समय पाप करके फिर पुण्य करेंगे – ऐसी विपरीत भावना के बदले, इसी समय पाप से निवृत्त होकर अपने चित्त को धर्म में युक्त कर न!

धर्मात्मा को पुण्य के प्रताप से सहज ही लक्ष्मी आदि की प्राप्ति हुई हो तो उसे वह पात्रदान, यात्रा, जिनबिम्ब प्रतिष्ठा-महोत्सवादि में लगाता है, किन्तु 'मैं व्यय करने के लिए लक्ष्मी कमाऊँ' – इसमें तो ममत्व का पोषण है। यदि वास्तव में राग की मन्दता हो तो जो प्राप्त हुआ है, उसी में से ममत्व कम कर न!

जैसे, कोई जीव यह माने कि – 'केवली भगवान ने अपने अनन्त भव देखे होंगे तो एक भी भव कम नहीं होगा' – तो ऐसा कहनेवाले की दृष्टि भव पर और भव के कारणरूप विकार पर ही पड़ी है, किन्तु केवलज्ञान के कारणरूप ज्ञायकस्वभाव पर उसकी दृष्टि नहीं है; वह केवली भगवान का नाम लेकर भी मात्र विपरीतदृष्टि का ही पोषण कर रहा है। उसी प्रकार जो जीव यह कहता है कि – 'भविष्य में दानादि द्वारा पुण्य करने के लिए मैं इस समय लक्ष्मी कमा लूँ' – तो वह भी पुण्य के बहाने मात्र ममत्व का ही पोषण कर रहा है, वास्तव में लक्ष्मी के प्रति उसका लोभ कम नहीं हुआ है। 'पाँच लाख मिले हैं, इन्हें बढ़ाकर दस लाख कर दूँ और फिर दान में व्यय करूँगा' – ऐसा कहता है, तो हे मूढ़! इस समय जो पाँच लाख हैं, उनमें से एक लाख का ममत्व कम कर! ममत्व तो कम करना नहीं है और भविष्य में पुण्य करने की ओट लेकर तू उल्टा ममत्व बढ़ाता है, क्या यह तेरा विवेक है?

प्रश्न – लक्ष्मी एकत्रित करने के पीछे हमारा भाव तो उसे धर्म-कार्यों में खर्च करने का है, इसलिए तो हमारी शुद्धवृत्ति है?

उत्तर – लक्ष्मी आदि कमाने का भाव, पापवृत्ति के बिना आता ही नहीं। शुद्धवृत्ति हो तो लक्ष्मी आदि प्राप्त करने का भाव हो ही नहीं सकता। जिस प्रकार नदी में बाढ़ आने पर उसमें चारों ओर का मैल भी साथ ही आता है; उसी प्रकार लक्ष्मी का ढेर इकट्ठा करने की वृत्ति में पापभाव भरा ही है। यदि पाप का भाव भी न हो – लोभ कषाय न हो तो आत्महित का उद्यम क्यों नहीं करता? और लक्ष्मी प्राप्त करने का उद्यम क्यों करता है? लक्ष्मी एकत्रित करने का उद्यम करता है – दिन-रात उसी में उपयोग को लगाता है और फिर कहता है कि हमें पापभाव नहीं है – तो वह तेरी दुर्बुद्धि है। इसलिए हे भाई! सन्त तुझे हित का उपदेश देते हैं कि ऐसा अवसर मिला है तो अब अपनी बुद्धि को आत्महित के कार्यों में लगा... कुछ निवृति लेकर चैतन्यस्वभाव की ओर उन्मुख हो... जिससे तेरा हित होगा। **तेरे जीवन का एक-एक क्षण लाखों का जा रहा है; आत्महित के लिए उसका उपयोग करके उसे सफल कर।** यदि चैतन्यहित की परवाह नहीं की और लक्ष्मी एकत्रित करने में ही जीवन बिता दिया तो तेरा जीवन व्यर्थ चला जाएगा... और फिर संसार में अनन्त काल तक भी ऐसा अवसर नहीं मिलेगा। हित के लिए यह अमूल्य अवसर आया है, इसलिए सावधान होकर अपने हित का उद्यम कर।●

(- इष्टोपदेश गाथा 14 के प्रवचन से)

अवश्य देखिये एवं सुनिये

तीर्थधाम मङ्गलायतन में महावीरस्वामी निर्वाणोत्सव के अवसर पर आयोजित शिक्षण-शिविर के सभी कार्यक्रम एवं विद्वानों द्वारा प्रदत्त स्वाध्याय आप इस लिंक पर देख सकते हैं:—

http://ustre.am/1xA9P

ऐतिहासिक अतिशयकारी पौराणिक तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर

श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान-दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हस्तिनापुर द्वारा

तीर्थधाम चिदायतन

का

शिलान्यास चिदोत्सव

(फाल्गुन कृष्णा एकम्, शनिवार, 11 फरवरी से फाल्गुन कृष्णा तृतीया, सोमवार, 13 फरवरी 2017 तक)

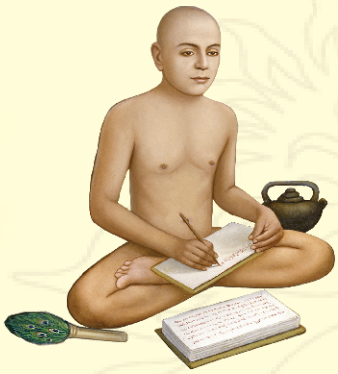

हमारे परम उपकारी वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु एवं तद्भक्त पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग में पौराणिक एवं ऐतिहासिक नगरी हस्तिनापुर में श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट हस्तिनापुर द्वारा निर्माणाधीन तीर्थधाम चिदायतन संकुल के प्रकल्पों का शिलान्यास महोत्सव आगामी 13 फरवरी 2017 को सुनिश्चित किया गया है। तदर्थ हस्तिनापुर में 11, 12 एवं 13 फरवरी 2017 को विशेष आयोजन किये जा रहे हैं।

अखिल विश्व मुमुक्षु समुदाय में इस संकुल के प्रति विशेष आकर्षण का भाव देखा जा रहा है और इस शिलान्यास महोत्सव में देश एवं विदेशों से हजारों की संख्या में आत्मार्थी भाई-बहिनों के पहुँचने की सम्भावना है।प रमउ पकारीप ूज्यग ुरुदेवश्रीक ानजीस्वामीके प्र भावनाउ दयम ें स्थापितइ स म हानत ीर्थधामक ी शिलान्यास तिथियाँ आप अभी से सुनिश्चित कर लें और उक्त तिथियों में अवश्य हस्तिनापुर पधारकर गुरुदेवश्री की प्रभावनोदय में जुड़ने जा रहे इस स्वर्णिम अध्याय के सहभागी बने – ऐसा हार्दिक विनम्र निवेदन है।

निवेदक :

श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट हस्तिनापुर

श्री मुकेशचन्द जैन, 9837079003; पण्डित अशोक लुहाड़िया, 9897890893

e-mail : nairkcd@yahoo.com; info@mangalayatan.com; mukeshjain09@gmail.com

आवास पंजीकरण पत्र

श्री शान्तिनाथ-अकम्पन-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट

के तत्त्वावधान में

तीर्थधाम चिदायतन शिलान्यास समारोह

शनिवार, 11 फरवरी 2017 से सोमवार, 13 फरवरी 2017 तक

कार्यक्रम स्थल— तीर्थधाम चिदायतन, हस्तिनापुर

प्रमुख व्यक्ति का नाम		कुल संख्या
पूर्ण पता—		
शहर	पिनकोड	राज्य
S.T.D. Code	Phone No. :	Mobile No.
E-mail -		

साधर्मियों का विवरण

क्र.सं.	साधर्मी का नाम	पिता/पति का नाम	पु.	स्त्री	आयु	**भोजनशाला** (शोध / सामान्य)
1						
2						
3						
4						
5						
6						

हस्तिनापुर पहुँचने के लिए आप फ्लाईट से दिल्ली एवं दिल्ली से बाय रोड मेरठ-मवाना होते हुए हस्तिनापुर पहुँच सकते हैं अथवा ट्रेन से मेरठ एवं मेरठ से हस्तिनापुर पहुँच सकते हैं।

हस्तिनापुर पहुँचने का साधन : **हवाई जहाज** ☐ **ट्रेन** ☐ **बस** ☐ **स्वयं का साधन** ☐

विशेष — (1) आवास आरक्षण की अन्तिम तिथि : **10 जनवरी 2017**

(2) कृपया फरवरी माह में ठण्ड होने के कारण अपने साथ गरम कपड़े आदि लेकर आवें।

आवासः— अम्बुज जैन # 9837020293 *एवं* **विकास जैन** # 8267027341 / **पता - 435, महावीरनगर, बी.बी.एन. स्कूल के पास, मेरठ शहर -250002 (उत्तरप्रदेश)** Email : ajvardhman@gmail.com

अन्य जानकारी के लिए — (1) मुकेशचन्द्र जैन # 9837079003 (2) अशोक लुहाड़िया # 9897890893

Email : mukeshjain09@gmail.com; info@mangalayatan.com

कार्यालय हेतु

आवास स्थान ..... रजिस्ट्रेशन नं० .....

एक चिन्तनपूर्ण आलेख (5)

गृहीत-मिथ्यात्व : नरभव की काली कमाई

गतांक से....

लेखक : प्रो० सुदीपकुमार जैन, दिल्ली

6. रागी-देवों को पूजने के मिथ्या-प्रयोजन—

कोई संसारी जीव इस लोक में राज्य, सम्पत्ति, स्त्री, सन्तान, आभूषण, वस्त्र, वाहन, ऐश्वर्य, धन, बल, सामर्थ्य, वैभव इत्यादि की प्राप्ति के लिए रागी-द्वेषी-मोही, शस्त्र-उपकरण आदि धारण किये हुए कुदेवों की मान्यताएँ मानता है, तो कोई संसारी जीव, भय, अन्धविश्वास, देखा-देखी, शर्मा-शर्मी / रीति-परम्परा के वश में आकर कुल-देवी-देवताओं, यक्ष-यक्षिणियों, पद्मावती-धरणेन्द्र, क्षेत्रपाल इत्यादि को पूजते हैं।

7. अविवेकपूर्ण पूज्य-पदार्थों की सूची—

बड़ी ही अजीब बात है भाई! कि कोई अन्न को पूज रहा है, कोई नदी को, कोई कह रहा है कि तिर्यंच (गाय) मोक्ष का द्वार है, कोई कुएँ को, कोई अस्त्र-शस्त्र को, कोई सिक्कों को, कोई तराजू-बट्टों को, कोई शटर व तालों को, कोई गज / मीटर-कैंची आदि उपकरणों को, कोई मिट्टी की मूर्तियों को, तो कोई पेड़ को और कोई-कोई तो अपने मरे हुए पूर्वजों को ही पूजने में लगा हुआ है। क्यों? अपने लौकिक स्वार्थों की सिद्धि के लिए। फिर भी इनकी पूर्ति की कोई गारण्टी नहीं है। कोई भी गारण्टी नहीं ले सकता है कि ऐसा करने से तेरे मन की इच्छा पूरी भी होगी या नहीं?

8. कर्म-सिद्धान्त का अपलाप—

गृहीत-मिथ्यात्वीजनों का रागी देवी-देवताओं को पूजना कर्म-सिद्धांत का स्पष्टरूप से अपलाप करना है। जबकि हम स्पष्ट पढ़ते हैं-सुनते हैं कि 'यह जीव अपने कर्मों का स्वयं ही कर्ता और स्वयं ही भोक्ता है।' हम पढ़ते हैं, सुनते हैं; लेकिन भयभीत हैं कि कहीं कुछ अनिष्ट न हो जाए, इसलिए डरकर पूजते रहने में ही भलाई मानते हैं। आत्मविश्वास से रहित और डरपोक लोग ही ऐसे घोर-अज्ञानतापूर्ण कृत्य करते हैं। जिनमें विवेक, आत्मविश्वास का लेशमात्र भी शेष है, वे इन कुदेवादिक को पूजनेरूप कायरता व दीनता के कृत्य कभी नहीं करते हैं।

9. झूठी अफवाहों का गर्म बाज़ार—

अफवाहें फैलानेवाले भी सुनियोजित तरीके से अफवाहें फैलाते हैं कि 'अमुक व्यक्ति ने पद्मावती को इस बार चोला नहीं चढ़ाया, तो उसका पुत्र मर गया, व्यापार बन्द हो गये।' किन्तु असल बात तो यह है कि आज तक ऐसा घटित होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। और कदाचित् कहीं संयोगवश ऐसा कुछ हुआ भी हो तो ऐसी घटनाएँ तो जीव के अपने किये हुए कर्मों का ही फल हैं और इनका किसी भी देवी-देवता के पूजने या न पूजने से कोई लेना-देना नहीं। स्पष्टरूप से यह भोले संसारी-जीवों को फँसानेके िलएर चाग याठ गोंक ास ुनियोजितष ाड्यन्त्रहै ,ि जसमें विवेकी जीव कभी नहीं फँसते हैं।

आजकल मन्दिर-समितियोंवालों ने लोगों की जेबें ढीली कराने का व गृहीत-मिथ्यात्व की पुष्टि का एक नया तरीका आजमाया हुआ है, वह है छत्र चढ़ाने का। सामान्य विधि से दर्शन-पूजन करने से भगवान शायद प्रसन्न नहीं हों, इसलिए चाँदी व सोने के छत्र चढ़ाकर उन्हें प्रसन्न करने का फार्मूला हिट कर रखा है। मन्दिर-कमेटियों वालों को भी कमाई का यह नया फण्डा बड़ा रास आ रहा है। 'हर्र लगे न फिटकरी, रंग चोखा' वाली कहावत सिद्ध हो रही है। चढ़े हुए छत्रों को माली लाकर फिर ऑफिस में दे देता है और कमेटीवाले फिर किसी नये अन्धभक्त को उसे चढ़ाने के लिए मोटी रकम लेकर बेच देते हैं। इस प्रकार वन टाइम इन्वेस्टमेंट में बैठे-बिठाये लाइफटाइम कमाई करने का यह नया फण्डा सिर्फ और सिर्फ भोले जीवों की श्रद्धा का इमोशनल-ब्लेकमेल हैद्व जिसमें वह धन से तो लुटता ही है, गृहीत-मिथ्यात्व का घोर पाप-बन्ध करके उसका दुष्परिणाम जन्म-जन्मान्तर तक भोगता है।

कारण कुछ भी हो, किन्तु यह सुनिश्चित है कि ऐसी मिथ्या-मान्यतावाले जीव नियम से खोटी गतियों में भ्रमण करेंगे।

10. गृहीत-मिथ्यात्व के दुष्परिणाम—

गृहीत-मिथ्यात्व के दुष्परिणाम स्वरूप यह जीव अनन्त संसार-परिभ्रमण करता है। 'छहढाला' में पण्डित दौलतरामजी ने तीसरी ढाल के 14 वें पद्य में लिखा है कि:—

कुगुरु कुदेव कुवृष सेवक की, नहिं प्रशंसा उचरै है।

कुगुरु, कुदेव, कुधर्म; कुगुरु सेवक, कुदेव सेवक, व कुधर्म सेवक ये छह अनायतन-दोष कहलाते हैं। इनकी भक्ति, विनय और पूजनादि तो दूर रही, किन्तु सम्यग्दृष्टि जीव उनकी प्रशंसा भी नहीं करता, क्योंकि ऐसा करने से भी उसके सम्यक्त्व में दोष लगता है।

सम्यग्दृष्टि जीव—

1. वीतरागी जिनेन्द्रदेव,
2. वीतरागी मुनि (परिग्रहरहित) और
3. वीतरागता की पोषक-जिनवाणी के अतिरिक्त किसी भी और को नहीं पूजता।

तो आप ही बताइये कि जब स्वयं सम्यग्दृष्टि इन तीन के अलावा

प्रकाशन तिथि - 14 नवम्बर 2016
R.N.I. : UPHIN/2007/23938
पोस्ट प्रेषण तिथि - 16-18 नवम्बर 2016
P.O.R. : ALG/90/15-17

किसी अन्य को नहीं वन्दता है, तो क्या हमें इनकी पूजा / भक्ति / आराधना करनी चाहिए?

इस प्रश्न का उत्तर अपने-आप से लीजिएगा जरूर, क्योंकि ये सिर्फ इस नहीं, परभव में भी काम आएगा। लोग रागी-देवों की अपने क्षुद्र सांसारिक-स्वार्थों के कारण पूजा न करें, और गृहीत-मिथ्यात्व न बढ़ायें; इसलिए यह विवरण यहाँ प्राणीमात्र के हित की मंगल भावना से प्रस्तुत किया गया है, किसी के भी प्रति ईर्ष्या या द्वेष की भावना से नहीं। फिर भी यदि किसी को बुरा लगता है, तो पण्डितप्रवर टोडरमलीजी के वचन मुझे समताभाव जगा रहे हैं कि—

'यदिद ुराचरणक ीि नन्दाक रेंअ ैरव ेश्याक ोब ुराल गे,य दि मद्यपान की बुराईयाँ बताने से कलाल (शराब विक्रेता) को बुरा लगे; तो हमारा उद्देश्य किसी की निन्दा करने का द्वेषपूर्ण भाव नहीं है, अपितु सस्वयं को व अन्य जीवों को इन बुराईयों से बचाकर आत्महित के मार्ग पर लगाने का सात्त्विक भाव है।'●●

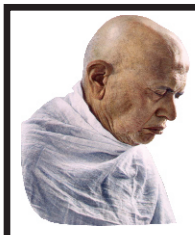

अरिहन्त चैनल पर पूज्य गुरुदेवश्री के पुरुषार्थसिद्धिद्युपाय ग्रन्थ पर प्रवचनों का प्रसारण

समस्त आत्मार्थी समाज को यह सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि परम उपकारी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पुरुषार्थसिद्धिद्युपाय ग्रन्थ पर हुए प्रवचनों का प्रसारण, गर्जतो ज्ञायक परिवार के सौजन्य से अरिहन्त चैनल पर 02 अक्टूबर 2016 से प्रारम्भ हो गया है। जो अब प्रतिदिन दो बार प्रसारित हो रहे हैं। प्रसारण समय प्रात: 07.00 से 07.20 एवं रात्रि 12.00 से 12.20 तक है। इन प्रवचनों में गुरुदेवश्री की विभिन्न मुद्रावाले चित्रों एवं सब टाइटल हिन्दी आता है, जिससे प्रवचन आसानी से समझा जा सकता है।

कृपया अधिक से अधिक संख्या में पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी का लाभ लें और इस समाचार का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार कर गुरुवाणी की प्रभावना में अपना योगदान दें।

मङ्गलायतन टाइम्स
वार्षिक सदस्यता : 25 रुपये मात्र
पन्द्रह वर्षीय सदस्यता : 300 रुपये मात्र

....पृष्ठ 3 का शेष

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमन्दिर का.....

महावीर हरसोरा, चिन्मय जैन, कोटा थे। कार्यक्रम का ध्वजारोहण छगनलाल धनोप्या परिवार द्वारा किया गया। विधान आयोजनकर्ता नेमीचन्द निश्चल जैन वघेरवाल परिवार भीलवाड़ा तथा विधान उद्घाटन महावीरकुमार रमेशचन्द्र चौधरी परिवार बिजौलियां द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त श्री वर्धमान जैन परिवार लांबाखोह; गुलाबचन्द जैन परिवार छीतरमल जैन सेठिया, रमेशचन्द धनोपिया, चाँदमल धनोपिया, ज्ञानमल राजेन्द्रकुमार सेठिया, चाँदमल जैन बज परिवार द्वारा श्रीजी विराजमान, मंगल कलश स्थापना इत्यादि कार्य सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ० मानमल जैन कोटा, पण्डित रतनचन्द शास्त्री कोटा, पण्डित ज्ञानचन्द जैन झालावाड़, पण्डित संजय जैन हरसोरा कोटा, पण्डित रमेशचन्द जैन इत्यादि का सानिध्य भी कार्यक्रम को प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में शोभायात्रा का कार्यक्रम ऐतिहासिक रहा। गाँव के सभी वर्गों के लोगों ने इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए सम्पूर्ण कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस जिनालय का शिलान्यास कार्यक्रम जनवरी 2017 में सम्भावित है।

वैराग्य समाचार

मैनपुरी : श्री वीरेन्द्रकुमार जैन, भोगाँववालों का देहपरिवर्तन शान्त परिणाम से हुआ है। विदित हो कि आप तीर्थधाम मङ्गलायतन के भोजनशाला प्रबन्धक श्री अखिलेश जैन के पिताश्री थे। तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार दिवंगत आत्मा के अभ्युदय की मंगल भावनासहित संतप्त परिजनों को संवेदनाएँ प्रेषित करता है।

प्रति,

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट
तीर्थधाम मङ्गलायतन
अलीगढ़-आगरा मार्ग, सासनी - 204216(उत्तरप्रदेश); फोन : 0571-2902977
www.mangalayatan.com; info@mangalayatan.com

सम्पादक : पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन, **सह-सम्पादक :** पण्डित सुधीर शास्त्री
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : पवन जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़ से छपवाकर **विमलाँचल,** हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़ से प्रकाशित।